वर्तमान समय में संस्कृत भाषा पर डिजिटलीकरण का प्रभाव

Dr. Narender Kumar
Assistant Professor, Department of Sanskrit, NIILM University, Kaithal, Haryana
http://doi.org/10.70388/niilmub/241208

1.भूमिका –

डिजिटलीकरण या 'डिजिटाइजेशन' (Digitization) किसी भी प्रकार की सूचना को या किसी भी प्रकार के दस्तावेज को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखने की प्रक्रिया है। आज के आधुनिक समय में इसका महत्व बहुत अधिक है क्योंकि हमें किसी भी प्रकार की सूचना या डाटा को हार्ड फॉर्मेट में रखना हो तो बहुत ज्यादा समय तथा कागज आदि बर्बाद होता है। इसी से बचने के लिए अपने सभी प्रकार के दस्तावेजों जैसे- अपने शिक्षा सम्बन्धी प्रपत्र, फोटो, कम्पनी आदि के सभी दस्तावेजों आदि को अपने डिजिटल मशीनों या कम्प्यूटर में संग्रहित करके रखते हैं, जिससे हमारा डाटा ज्यादा सुरक्षित रहता है और उसे प्राप्त करना बहुत ही आसान होता है।

डिजिटलीकरण का इतिहास 1950 के दशक में कंप्यूटर के आगमन से जुड़ा हुआ है। तब से डिजिटलीकरण ने लगभग हर चीज़ को कंप्यूटर-अनुकूल 1 और 0 में बदल दिया है और हमारे काम करने, संवाद करने, खरीदारी करने, बैंकिंग करने और यहाँ तक कि हमारे आराम करने और मनोरंजन करने के तरीके को भी बदल दिया है। डिजिटलीकरण ने आज के मानव को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका दिया है, हर मानव को जीवन जीने के लिए ज्ञान की बहुत ही आवश्यकता है, क्योंकि हमें एक अच्छा जीवन इसके बिना नहीं व्यतीत कर सकते है , जीवन में अनेक प्रकार के ऊतार – चढ़ाव आते रहते है । शिक्षा का हमारे जीवन में अहम् योगदान है , जो की आज के इस माँडर्न युग में दिन प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा है , हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाओं का प्रचलन है । लेकिन वेदों की भाषा संस्कृत भाषा है , जिसके अंदर बहुत सारी खुबिया विद्यमान है , पहले हम संस्कृत भाषा का ज्ञान ताड़-पत्रों,पांडुलिपियों आदि के माध्यम से ग्रहण करते थे ,लेकिन आज के युग ने इतनी तरक्की कर ली है , कि हम सब बिना पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर सकते है । संगणक के उपयोग ने सम्पूर्ण जनमानस का कार्य सरल कर दिया है। संगणक की सहायता से मानव हर मुश्किल से मुश्किल ज्ञान को आसानी से प्राप्त कर सकता है । संस्कृत को भी संगणक की सहायता से सरलतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है

तथा संस्कृत में लिखे विशाल ज्ञान भण्डार को भी संगणक की सहायता से अन्य भाषाओं में परिवर्तित भी किया जा सकता है । संस्कृत भाषा के अंदर हर प्रकार का ज्ञान विद्यमान है , जिसको हम हर भाषा में बदल सकते है , जिससे ज्ञान देश और विदेश के हर मानव के लिए संभव है ।

वैज्ञानिकों का कहना है कि संस्कृत संगणक की भाषा भी हो सकती है। IIIT हैदराबाद में पाणिनीय व्याकरण और संस्कृत भाषा सहित अनेक भाषाओं का अनुवाद करने के लिए पाणिनीय व्याकरण का प्रयोग किया जा रहा है। IIIT हैदराबाद के प्रो० विनीत चैतन्य जी पाणिनीय व्याकरण को आधार मानकर विश्व के सभी भाषाओं के लिए वैश्विक व्याकरण तैयार कर रहे है जो कि अंग्रेजी सहित सभी वैश्विक भाषाओं के लिए उपयोगी होगा। यही कारण है कि आज संगणक के लिए जब एक ओर सॉफ्टवेयर वैज्ञानिकों की आवश्यकता है वहीं दूसरी ओर संस्कृत के विद्वानों की भी आवश्यकता है। आज दोनों विशेषज्ञ एक ही टेबल पर बैठकर संगणक को नई दिशा दे रहे है।

2.संस्कृत भाषा –

संस्कृत भी एक प्राकृतिक भाषा है। ये ऐसी पहली भाषा मानी जाती है।[(1)] जिसके व्याकरण को सुव्यवस्थित तरीके से लिपिबद्ध किया गया था। इसके भाषा के नियमों को व्यवस्थित करने का काम पाणिनी ने किया था। व्याकरण को लिखने में पाणिनी ने 'सहायक प्रतीकों का उपयोग किया था। जिसमें शब्दों या वाक्यों के अर्थ में दोहरापन कम से कम करने के लिए शब्दों में नए प्रत्यय लगाए।

संस्कृत भाषा वाक्य के लगभग हर हिस्से में विभक्तियों का उपयोग करती है। यहां तक की किसी व्यक्ति, जगह के नाम के अंत में भी विभक्ति का सम्बंधित रूप का होता है। जिससे पता चलता है कि वह वाक्य में कर्ता है या कर्म। इसलिए संस्कृत में शब्द का स्थान इतना महत्वपूर्ण नहीं है। यदि किसी वाक्य में तीन शब्द हैं तो उन्हें लिखने के 6 संभावित क्रम होंगे (जैसे बुद्धम् शरणम् गच्छामि, इसे बुद्धम् गच्छामि शरणम् या शरणम् गच्छामि बुद्धम् लिखा जा सकता है)। इसी तरह किसी वाक्य में 4 शब्द हैं तो उसको 24 संभावित क्रमों में लिखा जा सकता है। और इनमें से किसी भी तरीके से लिखने पर उस वाक्य का अर्थ नहीं बदलता। विभक्ति के उपयोग से सीमित

शब्दों में वाक्य पूरा हो जाता है। पर सिर्फ संस्कृत ही ऐसी अकेली भाषा नहीं है ऐसी और भी भाषाएं हैं। जैसे लैटिन की यही स्थिति है।

3.कम्प्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा संस्कृत –

80 के दशक में वैज्ञानिक कंप्यूटर के लिए बेहतर कृत्रिम भाषा बनाने में जुटे हुए थे। जिसमें बोलचाल की भाषा की अस्पष्टताएं ना हो। कंप्यूटर के लिए कुछ कृत्रिम भाषाएं जैसे कोबोल, लिस्प, सी पहले ही बन चुकीं थी। इस संदर्भ में अमरीकी कंप्यूटर वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने 1985 में एक पेपर प्रकाशित किया। इस पेपर में उन्होंने प्राकृतिक भाषाओं को कंप्यूटर की भाषा के तौर पर उपयोग करने के बारे में लिखा। इसमें उन्होंने संस्कृत को केस स्टडी के रूप में लिया। उन्होंने बताया कि कैसे संस्कृत का ढांचा बेहतर है ? और संस्कृत भाषा नियमबद्ध है और ये नियम स्पष्ट हैं। ये नियम कृत्रिम भाषा के नियमों के काफी करीब हैं। क्योंकि संस्कृत में शब्दों के स्थान बदलने से उसके अर्थ पर फर्क नहीं पड़ता इसलिए कंप्यूटर में वाक्यों को तोड़ने और उसे क्रम में जमाने की समस्या कम आएगी। उन्होंने प्राचीन व्याकरण लिखने वालों के तरीकों का अध्ययन किया और ये सुझाव दिया कि प्राकृतिक भाषाओं को कंप्यूटर की भाषा के लिए उपयोग किया जा सकता है। किंतु इस पेपर की सिर्फ कुछ बातों को लिया गया और यह मान लिया गया कि संस्कृत सबसे उपयुक्त भाषा है।

संस्कृत कम्प्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा मानी गयी है|[(2)] संस्कृत को कम्प्यूटरों के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा माना जाने के कई कारण हैं, जो संक्षेप में निम्नलिखित हैं।

1. संस्कृत में विभक्तियों के लिए किसी अलग शब्द का प्रयोग नहीं होता, बल्कि शब्दों में ही अतिरिक्त मात्रा अथवा अक्षर जोड़कर विभक्ति का प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी में 'कमरे में' 2 शब्द हैं, इसके लिए हम अंग्रेजी में तीन शब्द लिखते हैं- 'इन द रूम'। लेकिन संस्कृत में केवल एक शब्द लिखा जाता है- 'कक्षे'। इससे न केवल पूरा अर्थ मिल जाता है, बल्कि अर्थ में किसी प्रकार के भ्रम की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। जैसे 'कमरे में' को 'में कमरे' लिखने से अर्थ विकृत हो जाता है। लेकिन संस्कृत में ऐसा नहीं हो सकता। इसी प्रकार अन्य विभक्तियों के बारे में भी समझा जा सकता है।

2. संस्कृत में सात विभक्तियां हैं, जितनी शायद अन्य किसी भाषा में नहीं हैं।इससे इनसे किसी वाक्य का पूरा भाव सही-सही ग्रहण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी की विभक्ति 'से' को कई रूपों में उपयोग किया जाता है, जैसे 'राम से कहा', 'वाहन से गया', 'पेड़ से गिरा' आदि। इसी प्रकार अंग्रेजी की 'टु' विभक्ति को भी कई रूपों में प्रयोग किया जाता है, जैसे- 'राम सेड टु श्याम', 'बुक सेंट टु हिम' 'कम टु मी' आदि-आदि । इन सभी उदाहरणों में एक ही विभक्ति का अर्थ अलग-अलग है। संस्कृत में इन सबके लिए अलग-अलग विभक्तियाँ है, जैसे- कर्ता, कर्म, कर्ण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बंध,अधिकरण, सम्बोधन । इसलिए संस्कृत में अर्थ-ग्रहण में किसी प्रकार का भ्रम नहीं हो सकता।

3. संस्कृत भाषा का महत्व इस तरह से भी समझ सकते हैं । संस्कृत में किसी वाक्य में शब्दों का क्रम बदल जाने पर भी अर्थ नहीं बदलता, जबकि अन्य भाषाओं में अर्थ का अनर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए, हिन्दी का एक वाक्य लीजिए- 'कमरे में एक बच्चा है।' इसको अंग्रेजी में 'देयर इज ए चाइल्ड इन द रूम' इस प्रकार लिखा जाता है, जबकि संस्कृत में केवल 'कक्षे बालकः अस्ति' लिखा जाता है। अब हिन्दी वाक्य के शब्दों को उलट-पुलट कीजिए, जैसे- 'बच्चा में कमरे एक है।' इससे वाक्य विकृत हो गया। ऐसा ही अंग्रेजी में होता है। लेकिन संस्कृत में हम इस वाक्य को किसी भी तरह लिखें जैसेः-

'बालकः कक्षे अस्ति',

'अस्ति कक्षे बालकः',

'बालकः अस्ति कक्षे'

'कक्षे अस्ति बालकः' या 'अस्ति बालकः कक्षे',

परन्तु कभी भी इसका अर्थ नहीं बदलता। यहाँ आप तीनों शब्दों को उलट-पुलट करने की सभी संभावनाओं को शामिल करके देख लिया है।

4. इन गुणों के कारण संस्कृत को अनुवाद की सर्वश्रेष्ठ भाषा या माध्यम माना जाता है। हम किसी भी भाषा के वाक्यों का अनुवाद सरलता से संस्कृत में कर सकते हैं और फिर संस्कृत पाठ्य का अनुवाद किसी तीसरी भाषा में किया जा सकता है। इससे अनुवाद अधिकतम सही प्राप्त होगा,

इसकी गारंटी है। पहली भाषा से तीसरी भाषा में सीधे अनुवाद करने पर इसकी गारंटी नहीं दी जा सकती।

5. संक्षेपता के गुण के कारण संस्कृत को कम्प्यूटर प्रोग्राम लिखने के लिए भी सर्वश्रेष्ठ भाषा माना गया है, और यह संस्कृत भाषा का महत्व को दर्शाता है । संस्कृत का प्रयोग कंप्यूटर भाषा के रूप में प्रयोग करने के लिए नासा तैयारी कर रहा है । हालांकि अभी तक इसका उपयोग इस कार्य में नहीं कियाजा सका है।

6. संस्कृत को जिस देवनागरी लिपि में लिखा जाता है, वह संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि है। इसमें लिखने और उच्चारण करने में किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं है। स्वरों और व्यंजनों की संख्या भी आवश्यक और पर्याप्त है। इसलिए कम्प्यूटर में ध्वनि आधारित उपयोगों के लिए भी संस्कृत सर्वश्रेष्ठ भाषा मानी गयी है।

सम्भव है इनके अतिरिक्त एक-दो कारण और भी हों। लेकिन ये कारण ही यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि संस्कृत कम्प्यूटरों के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा है, और यह संस्कृत भाषा के महत्व को दर्शाता है ।

4.संस्कृत भाषा पर डिजिटलीकरण का प्रभाव :–

पुरातन और आधुनिक समय में कई दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ दोनों कालों में इसके प्रभाव की तुलना की गई है |

पुरातन समय में डिजिटलीकरण का प्रभाव : -

1.संग्रह और संरक्षण : - पुरातन समय में संस्कृत के ग्रंथ और पांडुलिपियाँ भौतिक रूप में मौजूद थीं और इनका संरक्षण भौतिक तरीकों से किया जाता था। डिजिटलीकरण ने इन ग्रंथों को डिजिटल प्रारूप में सुरक्षित करने , भौतिक क्षति से बचाना और उनकी दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित की।

2.डिजिटल आर्काइव्स : - प्रारंभिक डिजिटलीकरण के प्रयासों ने संस्कृत ग्रंथों को डिजिटल आर्काइव्स में संग्रहित किया, जो भौतिक रूप में सहेजने के लिए जोखिम भरे थे।

3. पहुंच और उपलब्धता : -पुरातन समय में संस्कृत ग्रंथों की पहुँच विशेष पुस्तकालयों और संग्रहों तक ही सीमित थी। डिजिटलीकरण ने इन ग्रंथों को ऑनलाइन उपलब्ध करके उनकी पहुँच को वैश्विक स्तर पर विस्तृत किया जा सके यह लक्ष्य बनाया । पुराने समय में इन ग्रंथो को कम ही ऑनलाइन देखा गया है |

3. शोध और विश्लेषण : -प्रारंभिक डिजिटलीकरण ने शोधकर्ताओं को ग्रंथों को एकत्रित और व्यवस्थित करने में सहायता की, हालांकि विश्लेषणात्मक टूल्स अभी तक विकसित नहीं हुए थे।

4. शिक्षा और प्रचार : -संस्कृत की शिक्षा और प्रचार पारंपरिक तरीकों से होती थी |[3]जैसे शास्त्रार्थ और पाठशाला में शिक्षण। डिजिटलीकरण के प्रारंभिक चरणों ने इन तरीकों को डिजिटल प्रारूप में लाने का आधार तैयार किया।

वर्तमान समय में डिजिटलीकरण का प्रभाव : -

1.उन्नत संग्रहण : - आधुनिक डिजिटलीकरण ने संस्कृत ग्रंथों को उच्च गुणवत्ता वाले डिजिटल प्रारूप में संग्रहित किया है। इसके साथ ही, ऑटोमेटेड बैकअप और क्लाउड स्टोरेज ने उनकी सुरक्षा को और भी अधिक मजबूत किया है। संस्कृत भाषा को आज मानव अपने घर बैठे ही सिख सकता है एवं अच्छा उच्चारण भी कर सकता है | क्योंकि आज ऑनलाइन क्लास के माध्यम से शिक्षा में सरलता आ गयी है |

2.AIऔर ML का उपयोग : - कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग (ML) का उपयोग कर डिजिटल ग्रंथों का विश्लेषण और पुनर्स्थापन अधिक प्रभावशाली ढंग से किया जा रहा है। इससे विद्वानों द्वारा किया गया ग्रंथो का विश्लेषण हम आसानी से पढ़ सकते है |

3.ग्लोबल पहुँच : - डिजिटल लाइब्रेरी, ऑनलाइन डेटाबेस, और ओपन एक्सेस प्लेटफॉर्म ने संस्कृत ग्रंथों को वैश्विक स्तर पर सुलभ बनाया है। यह न केवल विद्वानों के लिए बल्कि आम लोगों के लिए भी फायदेमंद है। इससे हमारी संस्कृत भाषा का प्रचार विदेशों तक भी पहुंच गया है,जिससे बाहर के व्यक्ति भी हमारे देश में आकर इसके ज्ञान को ग्रहण करते है|

4.ऑनलाइन संसाधन : - डिजिटल पाठ्यक्रम, ई-बुक्स, और अन्य संसाधन अब कहीं भी और किसी भी स्थान पर उपलब्ध हो सकते हैं, जिससे संस्कृत की शिक्षा और अध्ययन में क्रांति आई है।

5.उन्नत डिजिटल टूल्स : - आधुनिक डिजिटल टूल्स, जैसे प्राकृतिक भाषा प्रोसेसिंग (NLP) और ग्रंथ विश्लेषण सॉफ़्टवेयर, ने संस्कृत ग्रंथों के विश्लेषण को अधिक सटीक और प्रभावशाली बना दिया है।

6.डेटा माइनिंग : - बड़ी मात्रा में डेटा को प्रोसेस करने की क्षमता ने संस्कृत साहित्य में नए पहलुओं की खोज और विश्लेषण को आसान बना दिया है।[(4)]

7.डिजिटल शिक्षण :- आधुनिक समय में ऑनलाइन पाठ्यक्रम, वीडियो लेक्चर्स, और इंटरैक्टिव सामग्री ने संस्कृत शिक्षा को व्यापक और विविध रूप में प्रस्तुत किया है।

8.वैश्विक प्रचार-प्रसार : - डिजिटल मीडिया ने संस्कृत की सांस्कृतिक, धार्मिक, और साहित्यिक महत्वताओं को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से संस्कृत भाषा का प्रचार सम्पूर्ण विश्व में फैलता जा रहा है , जिसके कारण संस्कृत भाषा का दिन प्रतिदिन महत्व बढ़ता जा रहा है |

5.डिजिटलीकरण के लाभ:-

1.सूचना की सुलभता:-डिजिटल रूप में सूचना को आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से भेजा जा सकता है| [(5)] और उसे तुरंत प्राप्त किया जा सकता है। इंटरनेट की मदद से जानकारी की उपलब्धता और वितरण सरल हो गया है।

2.समय और लागत की बचत:-डिजिटल टेक्नोलॉजी की वजह से कई प्रक्रियाएं तेज और सस्ती हो गई हैं। उदाहरण के लिए, दस्तावेजों का इलेक्ट्रॉनिक रूप से आदान-प्रदान करना और ऑनलाइन लेन-देन करना भौतिक कागज और भौतिक शिपिंग की तुलना में बहुत अधिक प्रभावी है।

3.उत्पादकता में वृद्धि:-डिजिटल टूल्स और सॉफ्टवेयर के उपयोग से कार्यों को स्वचालित और अधिक कुशल बनाया जा सकता है। यह कार्यक्षमता को बेहतर बनाता है और उत्पादकता को बढ़ाता है। इससे कम समय में अधिक कार्य किये जाते है |

4.संसाधनों की बेहतर प्रबंधन:-डिजिटल सॉल्यूशंस जैसे क्लाउड स्टोरेज और डेटा एनालिटिक्स, संसाधनों की बेहतर निगरानी और प्रबंधन में सहायक होते हैं।

5.उपभोक्ता अनुभव में सुधार:-ऑनलाइन शॉपिंग, ई-बैंकिंग, और डिजिटल सेवाओं के माध्यम से उपभोक्ताओं को अधिक सुविधाएं और बेहतर अनुभव मिलते हैं। इससे हमें बंको आदि में पैसे के लिए जाने की आवश्कता नहीं रहती है ।

6.शिक्षा और प्रशिक्षण में सुधार:-ई-लर्निंग और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा को सुलभ और लचीला बनाया जा सकता है, जिससे लोगों को नई कौशल और ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है। इसके माध्यम से हर भाषा को आसान बना दिया गया है , डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से बच्चों को आज के समय में अच्छी शिक्षा प्राप्त हो रही है ।

6.डिजिटलीकरण की हानियां :-

1.साइबर सुरक्षा के खतरे:-डिजिटल डेटा की चोरी, हैकिंग, और अन्य साइबर अपराध एक बड़ा खतरा हो सकते हैं। डेटा की सुरक्षा के लिए उच्च स्तर की सुरक्षा प्रोटोकॉल की आवश्यकता होती है। क्योंकि हम अपने डेटा को अधिक सुरक्षित रखने के लिए हाई क्वालिटी के डिजिटल सामग्री की आवश्कता होती है ।

2.तकनीकी निर्भरता:-अत्यधिक डिजिटल निर्भरता की वजह से यदि तकनीकी समस्याएं उत्पन्न होती हैं, तो यह कार्यों में बाधा डाल सकती है और गंभीर समस्याएं पैदा कर सकती है। इससे हमारा सारा कार्य इन पर ही निर्भर हो जाता है,तकनिकी खराब होने पर हम कुछ नहीं कर पाते है ।

3.गोपनीयता की चिंताएँ:-डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर व्यक्तिगत जानकारी और डेटा का संग्रहण और उपयोग निजता की चिंताओं को जन्म देता है। डेटा संग्रह और निगरानी से संबंधित मुद्दे बढ़ सकते हैं। इससे हम अपने निजी कार्य और फोटो आदि की गोपनीयता को कम ही सुरक्षित रख पाते है ।

4.डिजिटल असमानता:-सभी लोगों के पास समान रूप से डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट की पहुंच नहीं होती। इससे सामाजिक और आर्थिक असमानता बढ़ सकती है, क्योंकि कुछ लोग डिजिटल लाभों से वंचित रह जाते हैं। अर्थात इससे गरीब और अमीर बनने की भी समस्याए आती है ।

5.स्वास्थ्य समस्याएँ:-अत्यधिक डिजिटल डिवाइजों का उपयोग करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं जैसे कि आंखों की समस्याएँ, नींद की समस्याएँ और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इनका उपयोग करने से मानव की उम्र कम होती जा रही है, जिससे वह जल्दी ही स्वर्ग लोक पहुंच जाता है ।

6.सामाजिक और पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव:-डिजिटल टेक्नोलॉजी के अत्यधिक उपयोग से पारंपरिक सामाजिक और पारिवारिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, जैसे कि कम आमना-सामना और व्यक्तिगत बातचीत की कमी।अब मानव का आपस में मिलना – जुलना बिल्कुल ही कम हो गया है, मानव हर कार्य को फोन आदि द्वारा ही कर लेता है|[(6)]

डिजिटलीकरण की प्रक्रिया में लाभ और हानियों का संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है। जहां इसके फायदे स्पष्ट हैं, वहीं इसके नकारात्मक पहलुओं को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। सही नीतियों और सुरक्षा उपायों के साथ, डिजिटल दुनियां के लाभों का अधिकतम लाभ उठाया जा सकता है।

7.निष्कर्ष : -

संक्षेप में, डिजिटलीकरण ने संस्कृत भाषा पर पुराने समय से लेकर आधुनिक समय तक प्रभावशाली परिवर्तन किए हैं। पुरातन समय में डिजिटलीकरण ने ग्रंथों की सुरक्षा और संग्रहण की आधारभूत जरूरतों को पूरा किया, जबकि आधुनिक समय में इसने शिक्षा, शोध, और सांस्कृतिक प्रचार के क्षेत्र में व्यापक और गहन प्रभाव डाला है। डिजिटलीकरण के माध्यम से संस्कृत भाषा को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक और सुलभ बनाए रखने में सहायता मिली है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि : -

1. Divedi, Mahavir Prasad. Sahitya-Vichar. Vani Prakashan, 1995.
2. Bulcke, Father Camil. English Hindi Dictionary. S. Chand Publishing, 2005.
3. Omvedt, Gail. Ambedkar. Penguin Random House India Private Limited, 2017.
4. Kumar, Rohit. Rashtrey Shiksha Neeti 2020 Lagu Hone Ke Pashchat Shiksha Kshetr Men Chunautiyan. Insta Publishing.

5. Ambedkar, B. R. भगवानबुद्धऔरउनकाधम्म: भगवानबुद्धऔरउनकाधम्म. Vol. 1. Ssoft Group, India, 2014.
6. Khare, Dr. Manish, and Dr. Babita Verma, eds. Bharat me Shiksha-Neti Ki Dasha Evam Disha. Shree Vinayak Publication, 2021.